अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : जून (द्वितीय)

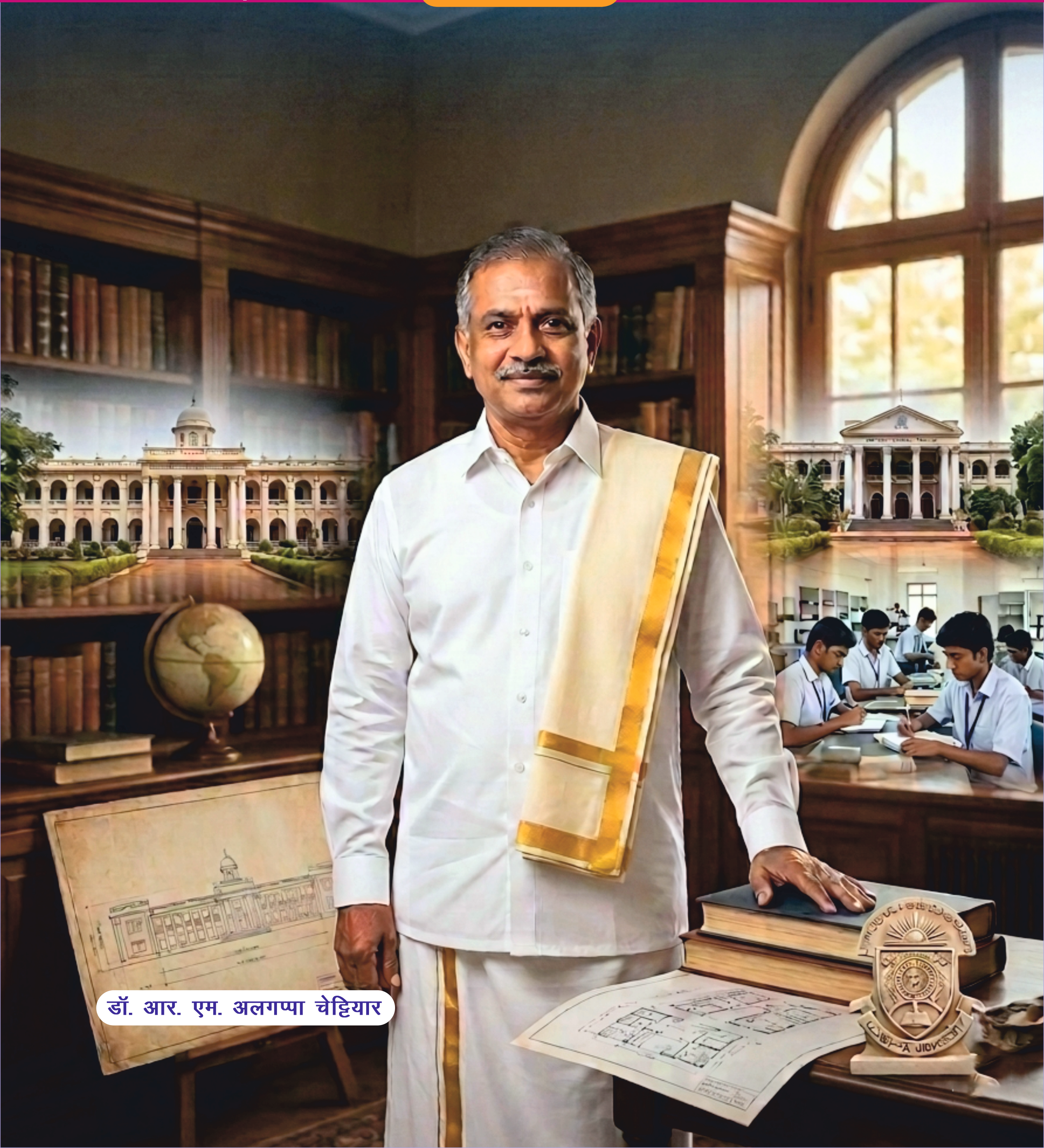

डॉ. आर. एम. अलगप्पा चेट्टियार

खेती की बदलती तस्वीर और किसानों की नई उम्मीद

मिट्टी के स्वास्थ्य की रक्षा

मिट्टी केवल धूल या रेत का मिश्रण नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत प्रणाली है जिसमें असंख्य सूक्ष्म जीव रहते हैं। बार–बार जुताई करने से मिट्टी की संरचना प्रभावित होती है और जैविक तत्वों का ह्रास होता है।

जीरो टिलेज मिट्टी को कम छेड़ती है, जिससे उसके भीतर रहने वाले लाभकारी जीव सुरक्षित रहते हैं। समय के साथ मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ती है, उसकी जल धारण क्षमता सुधरती है और उर्वरता में वृद्धि होती है। इस प्रकार यह तकनीक केवल वर्तमान उत्पादन ही नहीं बढ़ाती, बल्कि भविष्य की कृषि को भी सुरक्षित बनाती है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। कृषि क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। जीरो टिलेज के माध्यम से ट्रैक्टर और अन्य मशीनों का उपयोग कम होता है, जिससे ईंधन की खपत घटती है और कार्बन उत्सर्जन कम होता है।

इसके अतिरिक्त, फसल अवशेषों को जलाने की प्रवृत्ति भी कम हो सकती है। पराली जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। जीरो टिलेज किसानों को फसल अवशेषों के बेहतर प्रबंधन का अवसर प्रदान करती है।

बिहार के लिए विशेष

बिहार की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। राज्य में धान और गेहूं प्रमुख फसलें हैं। यहाँ बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसान खेती करते हैं। ऐसे किसानों के लिए लागत कम करने वाली तकनीकें अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

बिहार में धान कटाई के बाद गेहूं की बुवाई का समय सीमित होता है। जीरो टिलेज अपनाने से किसान समय पर बुवाई कर सकते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ने की संभावना रहती है। साथ ही, राज्य में बढ़ती जल समस्या के समाधान में भी यह तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

चुनौतियाँ और समाधान

हालाँकि जीरो टिलेज के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके व्यापक प्रसार में कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं। सबसे बड़ी चुनौती किसानों में जागरूकता की कमी और मशीनों की सीमित उपलब्धता है। कई किसानों को अभी भी इस तकनीक की पूरी जानकारी नहीं है।

इसके समाधान के लिए कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्रों तथा विश्वविद्यालयों को प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने चाहिए। किसानों को प्रदर्शन प्लॉट के माध्यम से इसके लाभ दिखाए जाने चाहिए। साथ ही, जीरो टिल सीड ड्रिल मशीनों पर अनुदान उपलब्ध कराया जाए ताकि अधिक से अधिक किसान इस तकनीक को अपना सकें।

निष्कर्ष

जीरो टिलेज केवल खेती की एक नई पद्धति नहीं, बल्कि कृषि के भविष्य की दिशा है। यह तकनीक किसानों की लागत कम करती है, समय बचाती है, जल और मिट्टी का संरक्षण करती है तथा पर्यावरण की रक्षा में भी योगदान देती है। बढ़ती चुनौतियों के दौर में ऐसी तकनीकों को अपनाना समय की आवश्यकता है।

यदि कृषि को लाभकारी, टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल बनाना है, तो जीरो टिलेज जैसी वैज्ञानिक पद्धतियों को खेत–खेत तक पहुँचाना होगा। यह तकनीक न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक होगी, बल्कि भारतीय कृषि को एक नई ऊर्जा और नई पहचान भी प्रदान करेगी।

(समाप्त)

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

सुभाषित

{ क्षणशः कणशश्चौव विद्यां अर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्॥ }

अर्थात् – प्रत्येक क्षण का उपयोग सीखने के लिए और प्रत्येक छोटे से छोटे सिक्के का उपयोग उसे बचाकर रखने के लिए करना चाहिए। क्षण को नष्ट करके विद्या प्राप्ति नहीं की जा सकती और सिक्कों को नष्ट करके धन नहीं प्राप्त किया जा सकता।

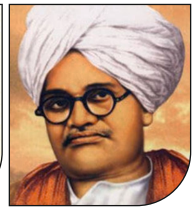

अनुक्रमणिका

बोध कथा 02
नारद स्मृति.. 03
स्वदेशी.. 05
विशेष 07
अपनी हिन्दी.. 10
संघ शताब्दी वर्ष 11

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।
शेष शुभ!

छत्रपति शिवाजी की उदारता

वीर मराठा छत्रपति शिवाजी अपने शत्रुओं को क्षमा दान देने के लिए काफी प्रसिद्ध थे। ऐसी ही एक घटना है। एक बार शिवाजी अपने शयनकक्ष में सो रहे थे। रात का समय था। एक चौदह वर्ष का बालक किसी तरह छुपकर उनके शयनकक्ष में जा पहुँचा। वह शिवाजी को मारने आया था। लेकिन शिवाजी के विश्वस्त सेनापति तानाजी मालुसरे ने उसे पहले ही देख लिया था। लेकिन फिर भी उन्होंने उसे जाने दिया। वह जानना चाहते थे कि आखिर यह लड़का क्या करने आया है?

उस लड़के ने तलवार निकाली और शिवाजी पर चलाने ही वाला था कि पीछे से तानाजी ने उसका हाथ पकड़ लिया। इतने में शिवाजी की भी नींद टूट गई।

उन्होंने उस बालक से पूछा कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो? उस बालक ने निडरता पूर्वक बताया कि उसका नाम मालोजी फौजदार है और वह शिवाजी की हत्या करने आया था।

जब शिवाजी ने उससे कारण पूछा तो उसने बताया कि "मैं एक गरीब घर से हूँ तथा मेरी माँ कई दिनों से भूखी है। इसलिए अगर मैं आपकी हत्या कर दूँ तो आपका शत्रु सुभान राय मुझे बहुत सारा धन देगा।

यह सुनकर तानाजी गुस्से में बोले, "मुर्ख बालक! धन के लोभ से तू छत्रपति शिवाजी का वध करने आया है। अब मरने के लिए तैयार हो जा?"

इतने में मालोजी शिवाजी से बोला, "महाराज! मैंने आपका वध करने की कोशिश की। अतः निरूसंदेह मैं दण्ड के योग्य हूँ, लेकिन कृपा करके मुझे अभी जाने दीजिये। मेरी माँ भूखी है वह जल्द ही मर जाएगी। माँ का आशीर्वाद लेकर मैं सुबह आपके सामने उपस्थित हो जाऊंगा।"

बालक की बातें सुनकर तानाजी बोले, "हम तेरी बातो के धोखे में आने वाले नहीं है, दुष्ट बालक!"

बालक मालोजी बोला, "मैं एक मराठा हूँ, सेनापति महोदय! और आप बखूबी जानते हो कि मराठा कभी झूठ नहीं बोलते।" इतना सुनकर शिवाजी ने उस बालक को जाने दिया।

दुसरे दिन सुबह जब राज दरबार में छत्रपति शिवाजी महाराज सिंहासन पर बैठे थे। तभी द्वारपाल एक सन्देश लेकर आया कि एक बालक महाराज से मिलना चाहता है। जब उसे अन्दर बुलाया गया तो यह वही बालक था जिसे कल रात शिवाजी ने माँ का आशीर्वाद लेने जाने दिया था।

महाराज के सामने आकर बालक बोला, "मैं आपका अपराधी महाराज! आपकी उदारता के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूँ। अब आप जो चाहे दण्ड दे सकते है।"

शिवाजी ने सिंहासन से उठकर उस बालक को गले लगाते हुए कहा, "तुम जैसे सच्चे मराठाओं को अगर मृत्यु दण्ड दे देंगे तो फिर जिन्दा किसे रखेंगे? आज से तुम हमारी सेना के सैनिक हो।"

छत्रपति ने उसे बहुत सारा धन दिया तथा उसकी माँ की चिकित्सा के लिए राज वैद्य को भेजा। साथ ही, उनकी माता के पालन–पोषण की जिम्मेदारी भी स्वराज्य ने ली।

डॉ. आर. एम. अलगप्पा चेट्टियार:
वह उद्योगपति जिसने देशहित को कारोबार से ऊपर रखा

भारत के इतिहास में ऐसे अनेक उद्योगपति हुए हैं जिन्होंने व्यापार के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल की, लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी हुए जिन्होंने अपनी संपत्ति और संसाधनों को केवल निजी लाभ तक सीमित न रखकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में समर्पित कर दिया। तमिलनाडु के पद्म भूषण सम्मानित उद्योगपति डॉ. रामनाथन मुथैया अलगप्पा चेट्टियार ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे। उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, विमानन और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह आज भी प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

6 अप्रैल, 1909 को तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के कोट्टायूर गांव में जन्मे अलगप्पा चेट्टियार ने यह सिद्ध कर दिया कि एक सफल व्यवसायी केवल धन कमाने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह समाज और राष्ट्र के विकास का भी महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। दुर्भाग्यवश उनका जीवन बहुत लंबा नहीं रहा और मात्र 48 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया, लेकिन इतने कम समय में उन्होंने जो कार्य किए, वे कई पीढ़ियों तक याद रखे जाएंगे।

शिक्षा और प्रारंभिक जीवन

अलगप्पा चेट्टियार का जन्म चेट्टिनाड क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे प्रतिभाशाली और महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने मद्रास के प्रेसिडेंसी कॉलेज से साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए और टेम्पल कॉलेज से बैरिस्टर बने।

कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद उनके सामने वकालत का आकर्षक करियर था, लेकिन उन्होंने व्यापार जगत में अपनी पहचान बनाने का निर्णय लिया। उनकी दृष्टि केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं थी। वे ऐसे उद्यमी बनना चाहते थे जो समाज के लिए भी कुछ बड़ा कर सके।

उद्यमिता की नई उड़ान

1937 में उन्होंने विमानन क्षेत्र में कदम रखते हुए कोचीन एयरलाइंस की स्थापना की। उस समय भारत में विमानन उद्योग अपने शुरुआती चरण में था। ऐसे दौर में निजी एयरलाइन शुरू करना दूरदर्शिता और साहस का परिचायक था।

धीरे–धीरे उनके व्यापारिक हित भारत के अलावा कई देशों तक फैल गए। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश किया और एक विशाल व्यापारिक साम्राज्य खड़ा किया। इसके बावजूद उनका लगाव अपने क्षेत्र कराईकुडी और चेट्टिनाड से बना रहा। वे हमेशा चाहते थे कि उनके गृह क्षेत्र के लोगों को शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर मिलें।

विभाजन के समय निभाई राष्ट्रधर्म की भूमिका

सन् 1947 भारत के इतिहास का सबसे कठिन समय था। देश को स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन विभाजन की त्रासदी ने करोड़ों लोगों का जीवन प्रभावित किया। लाखों लोग अपने घर–बार छोड़कर नए देशों की सीमाओं के भीतर शरण लेने को मजबूर हो गए। पूरे देश में मानवीय संकट की स्थिति थी।

ऐसे समय में अलगप्पा चेट्टियार ने एक असाधारण निर्णय लिया। उनकी निजी एयरलाइन जुपिटर एयरवेज उस समय अच्छी तरह संचालित हो रही थी। वे चाहते तो अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में इन विमानों का उपयोग कर सकते थे, लेकिन उन्होंने राष्ट्रहित को प्राथमिकता दी।

उन्होंने अपनी एयरलाइन के विमानों को सरकार के राहत कार्यों के लिए उपलब्ध करा दिया। इन विमानों के माध्यम से पाकिस्तान से भारत आने वाले शरणार्थियों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया गया। साथ ही भारतीय सेना के जवानों, सैन्य उपकरणों और आवश्यक सामग्री के परिवहन में भी महत्वपूर्ण सहायता मिली।

यह केवल एक व्यावसायिक निर्णय नहीं था, बल्कि देशभक्ति और मानवीय संवेदना का उत्कृष्ट उदाहरण था। उन्होंने दिखाया कि संकट के समय उद्योग जगत की जिम्मेदारी केवल लाभ कमाना

नहीं, बल्कि राष्ट्र के साथ खड़ा होना भी है।

शिक्षा के माध्यम से समाज परिवर्तन का सपना

अलगप्पा चेट्टियार का मानना था कि किसी भी समाज का वास्तविक विकास शिक्षा से होता है। इसलिए उन्होंने शिक्षा को अपनी परोपकारी गतिविधियों का केंद्र बनाया।

उन्होंने अनेक स्कूलों, कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों की स्थापना और विकास में योगदान दिया। उनके प्रयासों से चेन्नई और कराईकुडी में कई शिक्षण संस्थान स्थापित हुए। इनमें एसी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक संस्थान, नर्सिंग कॉलेज और अन्य शैक्षणिक केंद्र शामिल हैं।

बाद में इन्हीं प्रयासों की परिणति अलगप्पा विश्वविद्यालय के रूप में हुई, जो आज दक्षिण भारत के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में गिना जाता है। हजारों छात्र–छात्राएं यहां से शिक्षा प्राप्त कर देश और दुनिया में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

अलगप्पा चेट्टियार की सोच स्पष्ट थीकृयदि किसी क्षेत्र का भविष्य बदलना है, तो वहां शिक्षा के मजबूत संस्थान खड़े करने होंगे। यही कारण है कि उन्होंने अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा शैक्षणिक विकास के लिए समर्पित किया।

300 एकड़ भूमि का ऐतिहासिक दान

डॉ. अलगप्पा चेट्टियार के जीवन का सबसे उल्लेखनीय योगदानों में से एक था कराईकुडी में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए किया गया उनका ऐतिहासिक दान। उन्होंने भारत सरकार को 300 एकड़ भूमि और 15 लाख रुपये दान किए। उस समय यह राशि अत्यंत बड़ी मानी जाती थी। इस दान ने कराईकुडी में केंद्रीय विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान (सीईसीआरआई) की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

यह संस्थान आगे चलकर देश में इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री और वैज्ञानिक अनुसंधान का प्रमुख केंद्र बना। भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भी इस दान की सराहना करते हुए कहा था कि इसी उदार योगदान के कारण कराईकुडी को इस महत्वपूर्ण संस्थान के लिए चुना गया।

तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अलगप्पा चेट्टियार को "समाजवादी पूंजीवादी" कहा था। यह उपाधि उनकी उस सोच को दर्शाती है जिसमें निजी संपत्ति का उपयोग सामाजिक विकास के लिए किया जाता है।

एक छोटी पहल जिसने बड़ी नीति को प्रेरित किया

अलगप्पा चेट्टियार केवल बड़े–बड़े दान देने वाले व्यक्ति नहीं थे। वे समाज की छोटी लेकिन महत्वपूर्ण जरूरतों को भी समझते थे। उन्होंने कराईकुडी में गरीब और जरूरतमंद छात्रों के लिए मुफ्त भोजन की व्यवस्था शुरू कराई।

उनका मानना था कि भूखा छात्र अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए शिक्षा के साथ पोषण पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

कहा जाता है कि जब तमिलनाडु के लोकप्रिय नेता के. कामराज ने इस पहल को देखा, तो वे इससे काफी प्रभावित हुए। बाद में राज्य में विद्यार्थियों के लिए मध्याह्न भोजन योजना को बढ़ावा देने में इस विचार की प्रेरणा भी देखी गई। आज भारत की मध्याह्न भोजन योजना दुनिया के सबसे बड़े स्कूल पोषण कार्यक्रमों में गिनी जाती है।

प्रेरणादायी विरासत

डॉ. आर. एम. अलगप्पा चेट्टियार का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची सफलता केवल आर्थिक उपलब्धियों से नहीं मापी जाती। उनकी पहचान एक सफल उद्योगपति के रूप में अवश्य रही, लेकिन उससे कहीं अधिक वे एक शिक्षाविद्, समाजसेवी, राष्ट्रभक्त और दूरदर्शी परोपकारी थे।

उन्होंने विभाजन के समय अपने विमान राष्ट्र सेवा में समर्पित किए, शिक्षा के क्षेत्र में अनेक संस्थान स्थापित किए, वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए ऐतिहासिक दान दिया और गरीब छात्रों के लिए भोजन जैसी मानवीय पहल शुरू की। उनके कार्य आज भी यह संदेश देते हैं कि यदि धन और संसाधनों का उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाए, तो वे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य बदल सकते हैं।

बंगाल में भारत के आध्यात्मिक परम्परा की जीत

– मनमोहन वैद्य

दिसंबर 2025 और फरवरी 2026 में मुझे बंगाल जाने का अवसर मिला था। वहाँ अधिकांश लोग परिवर्तन की इच्छा तो रखते थे, किंतु यह परिवर्तन वास्तव में संभव हो सकेगा, ऐसा विश्वास बहुत कम लोगों को था। परिस्थितियाँ भी ऐसी थीं कि परिवर्तन किसी चमत्कार से कम नहीं लगता था। निष्पक्ष और स्वतंत्र मतदान के लिए आवश्यक खुला तथा निर्भय वातावरण तैयार करना सबसे बड़ी चुनौती थी। परंतु चुनाव आयोग, सर्वोच्च न्यायालय, केंद्रीय गृह मंत्रालय तथा सुरक्षा बलों के संयुक्त प्रयासों से यह संभव हो पाया।

बंगाल की जनता ने इस बार बढ़–चढ़कर मतदान किया। पिछले पाँच चुनावों 2001, 2006, 2011, 2016 और 2021 में मतदान का औसत 79.22: था, जबकि 2026 में यह बढ़कर 92.47: हो गया। अचानक हुई लगभग 13 प्रतिशत अंकों की इस वृद्धि में ॅप् का योगदान नकारा नहीं जा सकता। परंतु इसके साथ ही यह वृद्धि निर्भय माहौल और जनता के अभूतपूर्व उत्साह को भी दर्शाती है। इस चुनाव को समाज द्वारा एक सभ्यतागत संघर्ष के रूप में देखना, सुरक्षा बलों द्वारा अपनी भूमिका का समुचित निर्वहन करना और लोगों को अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रयोग के प्रति आश्वस्त करना, इन कारणों को भी नकारा नहीं जा सकता।

फरवरी 2026 में कोलकाता में एक वरिष्ठ महिला पत्रकार से भेंट हुई थी, जो पूर्णतः वामपंथी विचारधारा की हैं। 29 मई को उनसे फिर बात हुई। उन्होंने बताया कि जब वे 18 वर्ष की थीं, तब उन्होंने पहली बार मतदान किया था और उसके बाद अब 2026 में उन्होंने फिर से मतदान किया। वे इस समय 46 वर्ष की हैं। परिवर्तन की तीव्र इच्छा और यह विश्वास कि परिवर्तन संभव है, उनके मतदान के प्रमुख प्रेरक बने। बंगाल में चुनावों के दौरान हिंसा का इतिहास रहा है। ऐसे में इस बार का चुनाव अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण रहा। इसका श्रेय भी केंद्रीय गृह मंत्रालय को दिया जा सकता है। यही कारण है कि लोग निर्भय होकर घरों से बाहर निकले और मतदान किया।

इस चुनाव में केवल भाजपा की जीत नहीं हुई है। बंगाल की जनता ने भारत की आध्यात्मिक परंपरा और हिंदुत्व के विचार की विजय सुनिश्चित की है। ऐसा प्रतीत होता है कि बंगाल की आत्मा पुनः जागृत हुई है। यह रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जगदीशचंद्र बसु और बिपिनचंद्र पाल जैसे आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत महापुरुषों के बंगाल की आत्मा की विजय है।

यह क्षण मुझे 1905 में ब्रिटिश शासन द्वारा प्रस्तावित बंगाल–विभाजन के विरोध की याद दिलाता है। उस समय बंकिमचंद्र के 'वंदे मातरम' के उद्घोष के साथ बंगाल में अदम्य ऊर्जा, अभूतपूर्व एकता और राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ था। उस जागृति का विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि उसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासन को 1911 में बंगाल–विभाजन का प्रस्ताव निरस्त करना पड़ा। इतना ही नहीं, ब्रिटिश शासन को अपनी राजधानी भी 1911 में कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित करनी पड़ी। इस दृष्टि से देखा जाए, तो बंगाल के इस 2026 के चुनाव में भारत की आध्यात्मिक परंपरा और हिंदुत्व के विचार की विजय को बंगाल का "वंदे मातरम क्षण" कहा जा सकता है।

'वंदे मातरम' गीत बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 1875 में अपने उपन्यास 'आनंदमठ' के लिए लिखा था। 1896 में इसे पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गाया था। इसके बाद 1905 में अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित

बंगाल–विभाजन के विरोध में बंगाल की जनता ने "वंदे मातरम" को स्वतंत्रता आंदोलन का युद्धमंत्र बना लिया। बंगाल–विभाजन के प्रस्ताव के विरोध में पूरा भारत खड़ा हो गया था। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिनचंद्र पाल–लाल, बाल, पाल–को सबने अपना नेता मान लिया था। 'वंदे मातरम' का गान होते ही लोगों के भीतर अदम्य ऊर्जा और राष्ट्रीय चेतना का संचार हो जाता था। अनेक क्रांतिकारियों ने 'वंदे मातरम' के उद्घोष के साथ फाँसी का फंदा चूमते हुए हँसते–हँसते अपने प्राण न्योछावर किए।

ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तावित बंगाल–विभाजन के विरोध में 'वंदे मातरम' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। 16 अक्टूबर 1905, रविवार को कोलकाता में मनाया गया रक्षाबंधन उत्सव ऐतिहासिक और अत्यंत महत्वपूर्ण था। सामान्यतः रक्षाबंधन का पर्व श्रावण पूर्णिमा, अर्थात् अगस्त महीने में आता है। परंतु बंगाल–विभाजन के विरोध में 16 अक्टूबर को कोलकाता के हिंदू और मुस्लिम महिला–पुरुषों ने गंगाजी में स्नान किया, एक–दूसरे को राखी बाँधी और यह संकल्प लिया कि इस रेशमी धागे की तरह हम बंगाल को एक सूत्र में बाँधकर एकजुट रखेंगे और बंगाल का बँटवारा नहीं होने देंगे।

तब श्री अरविंद घोष ने पहली बार 'वंदे मातरम' को स्वतंत्रता का मंत्र कहा। राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए श्री अरविंद घोष 'वंदे मातरम' नाम से साप्ताहिक पत्रिका निकालते थे। 1907 में जर्मनी में मैडम भीकाजी कामा ने स्वतंत्र भारत का जो ध्वज फहराया था, उस पर 'वंदे मातरम' लिखा हुआ था। तब से 'वंदे मातरम' स्वाधीनता का मंत्र–गान, देशभक्ति का स्फूर्ति–गीत और क्रांतिकारियों का चेतना–मंत्र बन गया।

'वंदे मातरम' से प्रज्वलित क्रांति की ज्वाला से भयभीत होकर ब्रिटिश सरकार ने अप्रैल 1906 में इसके सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगा दिया। परंतु इस दमन के विरोध में बंगाल में अदम्य उत्साह और ऊर्जा का संचार हुआ और अंततः ब्रिटिश शासन को बंगाल–विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा।

यह ऊर्जा और उत्साह केवल बंगाल तक सीमित नहीं रहा। इस जागृति की ज्वाला संपूर्ण भारत में फैल गई। नागपुर में संघ के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार ने, जब वे दसवीं कक्षा के छात्र थे, 'वंदे मातरम' का सार्वजनिक उद्घोष कर विद्यालय प्रशासन का रोष सहन किया। इसके कारण उन्हें विद्यालय से निष्कासित भी किया गया।

तब से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्येक वार्षिक अधिवेशन में पूर्ण 'वंदे मातरम' का गान होता रहा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सरला देवी चौधरानी, पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर और ओंकारनाथ ठाकुर जैसे मूर्धन्य गायकों ने इसे स्वर दिया। कांग्रेस के सभी सदस्य, चाहे वे हिंदू हों या मुस्लिम, इसे स्वतंत्रता आंदोलन के प्राण–मंत्र के रूप में गाते रहे। किंतु 1921 के बाद ब्रिटेन की विभाजनकारी राजनीति के प्रभाव से कांग्रेस के भीतर सांप्रदायिक शक्तियों का प्रभाव बढ़ने लगा। इसके परिणामस्वरूप तुर्की के खिलाफत आंदोलन का समर्थन तथा 'वंदे मातरम' को सांप्रदायिक बताकर उसका विरोध करने जैसी प्रवृत्तियाँ उभरने लगीं। जो गीत 1920 तक स्वतंत्रता आंदोलन का प्राण–मंत्र माना जाता था, वही 1923 के बाद सांप्रदायिक कहा जाने लगा। यहीं से भारत–विभाजन के बीज बोए जाने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

भारतीय चिंतन में मनुष्य को केवल शरीर के रूप में नहीं, बल्कि शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा से युक्त पंचकोषात्मक सत्ता के रूप में देखा गया है। इसी प्रकार 'वंदे मातरम' में भारत का समग्र स्वरूप प्रस्तुत होता है। इसके प्रथम पद में भारतभूमि का वर्णन है, द्वितीय पद में भारत के जन, अर्थात् लोक का चित्रण है, जबकि बाद के पदों में भारत के मन, बुद्धि, प्राण और आध्यात्मिक चेतना का निरूपण मिलता है।

(क्रमशः)

महाराणा प्रताप का जीवन सत्ता प्राप्ति का नहीं, बल्कि लोककल्याण, आदर्श शासन और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा का उदाहरण है – सरसंघचालक जी

हल्दीघाटी विजय के 450 वर्ष पूर्ण होने और वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 486वीं जयंती के अवसर पर उदयपुर के गांधी ग्राउंड में 17 जून को प्रताप गौरव केन्द्र श्राष्ट्रीय तीर्थश के तत्वावधान में आयोजित 'राष्ट्र चेतना संकल्प सभा' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि भारत का इतिहास पराधीनता का नहीं, बल्कि विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध निरंतर चले संघर्ष, प्रतिरोध और आत्मगौरव का इतिहास है। हल्दीघाटी का युद्ध केवल दो सेनाओं का युद्ध नहीं था, बल्कि राष्ट्र चेतना और स्वाभिमान की रक्षा के लिए संपूर्ण समाज द्वारा लड़ा गया महासंग्राम था।

हल्दीघाटी विजय सार्द्ध चतु:शती समारोह में उन्होंने कहा कि युद्ध के उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों, समकालीन स्रोतों और स्वयं मुगल इतिहासकारों के वर्णनों से स्पष्ट होता है कि युद्ध के विभिन्न चरणों में मुगल सेना को पीछे हटना पड़ा। यदि युद्ध के बाद भी शत्रु भय और असुरक्षा की स्थिति में रहा, तो वास्तविक विजय किसकी थी, इसका निर्णय इतिहास स्वयं करता है।

उन्होंने युद्ध के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप की सेना के पहले ही आक्रमण ने मुगल सेना को दूर तक पीछे हटने के लिए विवश कर दिया था। चेतक के अद्भुत पराक्रम, प्रताप की युद्धनीति और सैनिकों के आत्मबल ने सीमित संसाधनों के बावजूद विशाल साम्राज्य की सैन्य शक्ति को चुनौती दी। महाराणा प्रताप की सेना में केवल राजवंश या योद्धा वर्ग नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज खड़ा था। जाति, पंथ, क्षेत्र और सामाजिक भेदों से ऊपर उठकर समाज राष्ट्ररक्षा के लिए एकजुट हुआ था।

सरसंघचालक जी ने कहा कि भारत का समाज कभी भी स्वेच्छा से पराधीनता स्वीकार करने वाला समाज नहीं रहा। जब–जब विदेशी आक्रांताओं ने इस भूमि पर अधिकार करने का प्रयास किया, तब–तब प्रतिरोध की अग्नि प्रज्ज्वलित हुई। उन्होंने बप्पा रावल, ललितादित्य, महाराणा प्रताप और अन्य वीरों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत की आत्मा को पराजित करना किसी भी आक्रांता के लिए संभव नहीं हो सका।

उन्होंने कहा कि इतिहास को कई बार सत्ता के निकट रहने वालों ने अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जिसके कारण अनेक राष्ट्रीय नायकों के योगदान को अपेक्षित स्थान नहीं मिला। हल्दीघाटी के युद्ध के संदर्भ में भी तथ्यों की पुनर्समीक्षा आवश्यक है। जिस महाराणा प्रताप की जयंती आज पूरे देश में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई जा रही है, वही इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि राष्ट्र अपने वास्तविक नायकों को कभी नहीं भूलता।

"दुनिया में कहीं अकबर की जयंती नहीं मनाई जाती, जबकि महाराणा प्रताप का स्मरण आज भी जन–जन करता है। इतिहास का यह लोकनिर्णय स्वयं बताता है कि विजय किसकी हुई थी।"

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप को 'हिंदुआ सूरज' यूं ही नहीं कहा गया। उन्होंने अपने धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान और राष्ट्रहित के लिए जीवनभर संघर्ष किया। उनका जीवन सत्ता प्राप्ति का नहीं, बल्कि लोक–कल्याण, आदर्श शासन और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा का उदाहरण है। उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसा आदर्श

स्थापित किया जो आज भी राष्ट्र जीवन को प्रेरणा देता है। भारत की शक्ति उसकी एकता, समरसता और आत्मविश्वास में निहित है। केवल संकट के समय ही नहीं, बल्कि सामान्य परिस्थितियों में भी समाज को संगठित और जागृत रहना होगा। स्वाभिमान और 'स्व' का भाव जब तक जीवित रहेगा, तब तक भारत हर चुनौती का सामना करते हुए विजय की नई गाथाएं रचता रहेगा। सभी नागरिक महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रोत्थान, समाज संगठन और विश्व कल्याण का संकल्प लें। भारत का उत्थान ही विश्व के कल्याण का मार्ग है और इसी दिशा में कार्य करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि निम्बार्काचार्य श्रीजी श्याम शरण देवाचार्य जी ने कहा कि यह आयोजन केवल एक ऐतिहासिक स्मरण नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान और सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का महापर्व है। वर्षों से इतिहास के संबंध में फैलाई गई भ्रांतियों का निराकरण अब समाज के सामने हो रहा है और महाराणा प्रताप के वास्तविक गौरव को पुनः स्थापित किया जा रहा है।

मेवाड़ की भूमि शौर्य और भक्ति दोनों की पावन धरा है। एक ओर इस भूमि ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक को जन्म दिया, वहीं दूसरी ओर भक्तिमती मीराबाई जैसी महान कृष्णभक्त को भी दुनिया को दिया। जब मातृभूमि और सनातन संस्कृति पर संकट आया, तब महाराणा प्रताप ने भगवान श्रीराम के "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" के आदर्श को आत्मसात करते हुए अपना सर्वस्व राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया।

श्रीजी श्याम शरण जी ने कहा कि राष्ट्रभक्ति की यही चेतना समय–समय पर विभिन्न रूपों में प्रकट होती रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक "नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे" की भावना के साथ मातृभूमि की सेवा के लिए समर्पित है। उन्होंने समाज से जाति, वर्ग और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का संदेश देती है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति के अध्यक्ष डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा जी ने कहा कि अब समय आ गया है कि हल्दीघाटी युद्ध के वास्तविक इतिहास को जन–जन तक पहुंचाया जाए और उन भ्रांतियों का निराकरण किया जाए जो वर्षों से समाज में प्रचारित की जाती रही हैं। इस वर्ष महाराणा प्रताप जयंती और हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होने का दुर्लभ संयोग बना है, जिससे इस आयोजन का महत्व और बढ़ गया है। उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप ने मुगल सेना को परास्त कर स्वाधीनता, स्वाभिमान और राष्ट्रधर्म की रक्षा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया था।

उन्होंने कहा कि हल्दीघाटी का युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच संघर्ष नहीं था, बल्कि विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध भारतीय अस्मिता की रक्षा का महान अभियान था। मेवाड़ ने कभी भी विदेशी सत्ता के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं किया और अपनी स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखा। समाज के सभी वर्ग अपने–अपने क्षेत्रों में जाकर हल्दीघाटी विजय के ऐतिहासिक सत्य को नई पीढ़ी तक पहुंचाएं। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में प्रशासन, मीडिया, सामाजिक संगठनों एवं हजारों कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना करते हुए इसे राष्ट्रचेतना के नवजागरण का ऐतिहासिक अभियान बताया।

प्रताप गौरव केन्द्र के निदेशक अनुराग सक्सेना ने सभी का स्वागत करते हुए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति व समिति के अंतर्गत संचालित प्रताप गौरव केन्द्र का परिचय दिया। प्रताप गौरव केंद्र में श्रव्य दृश्य प्रदर्शनी से महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी युद्ध में हार होने के विमर्श को तोड़ा गया है और महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी युद्ध में विजय होने के विमर्श को स्थापित किया गया है। हल्दीघाटी विजय सार्द्ध चतुरू शती समारोह के तहत वर्ष भर हुए आयोजनों की जानकारी भी दी। राष्ट्र चेतना संकल्प सभा में मेवाड़–वागड़ के कई संत–महंतों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मेवाड़ राजपरिवार के महाराणा विश्वराज सिंह मेवाड़ उपस्थित रहे।

सीमा के पार से साजिश, भीतर से चुनौती– मधुबनी कनेक्शन ने बढ़ाई सुरक्षा एजेंसियों की चिंता

भारत की आंतरिक सुरक्षा के सामने आतंकवाद अब केवल सीमापार से होने वाले हमलों तक सीमित नहीं रह गया है। पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षा एजेंसियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती ऐसे कथित स्लीपर सेल और डिजिटल नेटवर्क बन गए हैं, जो सोशल मीडिया, एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग प्लेटफॉर्म और विदेशी फंडिंग के माध्यम से देश के भीतर अपनी जड़ें मजबूत करने का प्रयास करते हैं। बिहार के मधुबनी जिले से सामने आया ताजा मामला इसी बदलते खतरे की ओर संकेत करता है।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए), बिहार एटीएस, मध्यप्रदेश एटीएस और स्थानीय पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में पंडौल थाना क्षेत्र के भौआड़ा गांव से मदरसा शिक्षक इजहार उल हक को गिरफ्तार किया गया है। जांच एजेंसियों का आरोप है कि वह प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर–ए–तैयबा से जुड़े नेटवर्क का हिस्सा था और भारत में कथित स्लीपर सेल तैयार करने के साथ–साथ उनके लिए विदेशी फंडिंग की व्यवस्था करने में सक्रिय भूमिका निभा रहा था। फिलहाल उससे पूछताछ जारी है और पूरे मामले की जांच चल रही है।

यह इस कथित आतंकी नेटवर्क में अब तक की चौथी गिरफ्तारी है। इससे पहले भोपाल से फराज उर्फ खालिद सैफुल्लाह, उत्तर प्रदेश के देवबंद से नईम अब्दुल्ला और राजस्थान के अलवर से शाकिर मेव को गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच एजेंसियों का मानना है कि इन गिरफ्तारियों से नेटवर्क की कई महत्वपूर्ण कड़ियां सामने आई हैं, जिनकी गहन पड़ताल की जा रही है।

इस मामले का सबसे चिंताजनक पहलू डिजिटल माध्यमों का कथित इस्तेमाल है। प्रारंभिक जांच के अनुसार टेलीग्राम और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर समूह बनाकर युवाओं तक पहुंचने, संदिग्ध सामग्री साझा करने और उन्हें प्रभावित करने की कोशिश की जा रही थी। यह

दर्शाता है कि आधुनिक आतंकवादी नेटवर्क अब हथियारों से पहले इंटरनेट और सोशल मीडिया को अपना प्रमुख माध्यम बना रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म की गुमनामी और एन्क्रिप्शन जांच एजेंसियों के लिए नई चुनौतियां भी खड़ी करते हैं।

विदेशी फंडिंग का पहलू भी उतना ही गंभीर है। एजेंसियों के अनुसार आरोपी के संभावित विदेशी आर्थिक स्रोतों की जांच की जा रही है। यदि जांच में ऐसे आरोप पुष्ट होते हैं, तो यह स्पष्ट होगा कि आतंकी गतिविधियों के लिए केवल विचारधारा ही नहीं, बल्कि संगठित वित्तीय नेटवर्क भी सक्रिय हैं। इसी कारण मोबाइल फोन, सोशल मीडिया अकाउंट, चौट रिकॉर्ड, कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) और डिजिटल उपकरणों की फॉरेंसिक जांच की जा रही है ताकि पूरे नेटवर्क का खुलासा हो सके।

हालांकि, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जांच अभी जारी है और सभी आरोपों का अंतिम सत्य न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही स्थापित होगा। किसी भी आरोपी को अदालत द्वारा दोष सिद्ध किए जाने तक कानून की नजर में निर्दोष माना जाता है।

मधुबनी का यह मामला केवल एक गिरफ्तारी भर नहीं है, बल्कि यह इस बात की चेतावनी भी है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे अब तकनीक, सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय नेटवर्क के सहारे नए रूप में सामने आ रहे हैं। ऐसे में सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता, डिजिटल निगरानी, समाज की जागरूकता और युवाओं को सकारात्मक दिशा देने के प्रयास पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

सही शीर्षक

—रवींद्र कुमार

1. कलाकारों ने खींचा पेंटिंग प्रदर्शनी से लोगों का ध्यान

इस खबर में बताया गया है कि कलाकारों द्वारा लगायी गयी पेंटिंग प्रदर्शनी इतनी आकर्षक थी कि उसने अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर लिया। लेकिन, इसका अर्थ यह भी निकलता है कि कलाकारों ने कुछ ऐसा कार्य किया होगा जिससे पेंटिंग प्रदर्शनी से लोगों का ध्यान हट गया। इसकी वजह यह है कि शीर्षक द्विअर्थक है। अच्छे शीर्षक की पहचान है कि वह नपे–तुले शब्दों में स्पष्ट और सटीक हो। उसे द्विअर्थक तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे पाठकों के मन में भ्रम पैदा होता है। इसी शीर्षक से भी भ्रम इसलिए पैदा हो रहा है कि 'हड़तालियों ने खींचा पढ़ाई से छात्रों का ध्यान' शीर्षक का अर्थ पढ़ाई से ध्यान हटाना ही लगाया जाएगा।

इसलिए शीर्षक में 'से' का प्रयोग करते वक्त ध्यान रखना चाहिए था कि यह दो कारकों का विभक्ति चिह्न है। ये कारक कारण और अपादान हैं। करण कारक के विभक्ति के रूप में इसे तृतीया विभक्ति कहा जाता है, जहां यह 'द्वारा' के अर्थ में साधन के रूप में प्रयुक्त होता है और इससे कार्य के संपादित होने का भाव प्रकट होता है; जैसे – (क) वह कलम से लिखता है, (ख) लड़की खुरपी से घास छीलती है। अपादान कारक के चिह्न के रूप में इसे पंचमी विभक्ति कहा जाता है, जहां इससे अलगाव अर्थात् किसी का किसी से अलग होने का भाव प्रकट होता है; जैसे – (क) पेड़ से पत्ते गिरे, (ख) छत से बंदर कूदा।

इससे स्पष्ट है कि दो कारकों का चिह्न होने के कारण 'से' से दो प्रकार के अर्थ निकलते हैं और ये दोनों प्रायः विपरीत अर्थ होते हैं। अतः यह शीर्षक द्विअर्थक नहीं हो, इसलिए इसे इस प्रकार लिखा जाना अधिक युक्तिसंगत और उपयुक्त होगा –

कलाकारों ने खींचा पेंटिंग प्रदर्शनी में लोगों का ध्यान

---

2. दलों के निजी स्वार्थ को लेकर महागठबंधन में दरार

इस शीर्षक के 'निजी' और 'स्वार्थ' शब्द विचारणीय हैं। निजी का अर्थ निज का, अपना, किसी एक व्यक्ति या वर्ग से संबंध रखने वाला, व्यक्तिगत आदि है। इसका अंग्रेजी पर्याय पर्सनल और प्राइवेट है। स्वार्थ 'स्व' में अर्थ मिलने से बना है। 'स्व' का अर्थ भी अपना, निज का आदि है; जैसे– स्वजाति यानी अपनी जाति का, स्वदेश यानी अपना देश, स्वजन यानी अपने परिवार के लोग। स्वार्थ का अर्थ है अपना अर्थ, लाभ या हित, अपनी भलाई आदि। इस प्रकार इन दोनों के अर्थ से स्पष्ट है कि निजी के साथ स्वार्थ का प्रयोग उचित नहीं है, क्योंकि स्वार्थ का 'स्व' 'निजी' का पर्यायवाची शब्द है। इन दोनों का एक साथ प्रयोग करने से पुनरुक्ति दोष आ जाता है। अतः इस दोष से बचने के लिए इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना चाहिए–

दलों के निजी हित को लेकर महागठबंधन में दरार

---

3. पेशकार ने वकील को पेन फेंककर मार दी

इस शीर्षक के लिंग का प्रयोग विचारणीय है। इसमें कई क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। नियमतः सकर्मक या अकर्मक क्रियाओं के बाद 'डाल' या 'दे' धातु (डालना या देना क्रिया) आने पर 'ने' विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः शीर्षक में 'ने' चिह्न का प्रयोग सही है। व्याकरण के नियमानुसार यदि कर्ता का 'ने' और कर्म 'को' चिह्न प्रयुक्त हो तो क्रिया सदैव एकवचन, पुलिंग और अन्य पुरुष में होती है; जैसे लड़कियों ने रोटियों को खाया। इस वाक्य में कर्ता लड़कियों और कर्म रोटियों के बहुवचन और 'स्त्रीलिंग रहने के बावजूद इनका किया पर प्रभाव नहीं पड़ने के कारण क्रिया 'खाया' पुलिंग और एकवचन है।

अब प्रश्न है कि शीर्षक की अंतिम क्रिया 'देना' का लिंग क्या हो? शीर्षक का कर्ता पेशकार और कर्म वकील, दोनों पुलिंग हैं। ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि ये दोनों स्त्रीलिंग भी होते, तब भी 'ने' और 'को' के प्रयोग के कारण क्रिया पुलिंग होती। लेकिन, इस शीर्षक का

शेष...2

ईंधन बचत का अभिनव प्रयोग–
कार्यकर्ता विकास वर्ग में हुआ किफायती चूल्हे का उपयोग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पश्चिम क्षेत्र के कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम) का आयोजन जलगांव स्थित खान्देश एजुकेशन सोसायटी के एम. जे. कॉलेज में किया गया। इस प्रशिक्षण वर्ग में 255 स्वयंसेवक शिक्षार्थी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके साथ ही 40 से 50 कार्यकर्ता विभिन्न व्यवस्थाओं में कार्यरत थे। लगभग 500 से 600 लोगों के दैनिक भोजन प्रबंधन की बड़ी जिम्मेदारी वर्ग के सामने थी। और संघ की कार्यपद्धति के अनुरूप पर्यावरण अनुकूल, स्वदेशी और कम खर्च वाले विकल्प खोजने का प्रयास विशेष चर्चा का विषय बना था।

सामान्यतः, इतने लोगों के भोजन निर्माण के लिए प्रतिदिन कम से कम दो बड़े एलपीजी गैस सिलेंडरों की आवश्यकता पड़ती। प्रत्येक सिलेंडर का खर्च जोड़ने पर प्रतिदिन लगभग 6 हजार रुपये खर्च होने का अनुमान था। पूरे 21 दिनों के वर्ग के लिए यह खर्च सवा लाख रुपये तक पहुंचता। किंतु, स्वयंसेवकों ने इसका वैकल्पिक समाधान खोज निकाला।

वर्ग के लिए धुले के स्वयंसेवक उद्योजक राहुल कुलकर्णी ने विशेष प्रकार का चूल्हा तैयार किया था। इस चूल्हे में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत का उपयोग किया गया। कपास अथवा तुअर (अरहर) के सूखे पौधों तथा गाय के गोबर के मिश्रण से तैयार 'वुड ब्लॉक्स', इस चूल्हे का मुख्य ईंधन था। बाजार में लगभग तीन रुपये प्रति किलो अथवा 150 से 200 रुपये प्रति बोरी की दर से वुड ब्लॉक्स आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

इस प्रयोग के कारण जहां प्रतिदिन लगभग 6 हजार रुपये का एलपीजी खर्च अपेक्षित था, वहीं अब मात्र 300 रुपये में भोजन निर्माण हुआ। अर्थात प्रतिदिन बड़े स्तर पर ईंधन की बचत हुई और खर्च में भी कमी आई है। विशेष बात यह है थी यह विकल्प केवल सस्ता ही नहीं, बल्कि पर्यावरण के भी अनुकूल था। खेती से निकलने वाला जैविक अवशेष उपयोगी ईंधन में परिवर्तित हो रहा था, जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिल रहा था।

सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने भी की सराहना

संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी तीन दिन तक वर्ग स्थल पर उपस्थित रहे। उन्होंने वर्ग की सभी व्यवस्थाओं और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी ली। इस चूल्हे के प्रयोग को स्वयं प्रत्यक्ष देखा और उसकी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने इस अभिनव प्रयोग की सराहना की। उन्होंने कहा, "ऐसा प्रयोग देश भर में चल रहे संघ शिक्षा वर्गों और अन्य कार्यक्रमों में भी किया जा सकता है।"

जामनेर में चल रहे देवगिरि प्रांत के संघ शिक्षा वर्ग में भी इसी प्रकार के चूल्हे का उपयोग किया गया। जलगांव और जामनेर के प्रयोगों ने "कम खर्च में प्रभावी व्यवस्थापन" का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। ग्रामीण क्षेत्रों, बड़े सामूहिक कार्यक्रमों तथा सामाजिक उपक्रमों में भी ऐसी वैकल्पिक ईंधन व्यवस्था उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

पर्यावरण संरक्षण, ईंधन बचत और स्वदेशी तकनीक का सुंदर संगम प्रस्तुत करने वाला यह प्रयोग प्रेरणादायी है।

अंग प्रदेश में संघ की बीज बोने वाले बाबा साहेब आपटे

मुंगेर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1939 में स्वर्गीय बाबा साहेब आपटेजी के प्रयास से मुंगेर के ही ओम प्रकाश गुप्ता के द्वारा हुई।

कांग्रेसी जिला होते हुए भी मुंगेर की हिंदुओं में हिंदुत्व की भावना भरी हुई थी। मुंगेर नगर में हिंदू महासभा के नेता सीताराम खेमका थे। 1939 में यहां हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ था और उसमें भाग लेनेवाले वीर दामोदर विनायक सावरकरजी, डॉ. मुंजे आदि का भव्य स्वागत हुआ था।

प्रथम संघ शाखाः—40 के दशक में पूरे अखंड भारत और बिहार में भी हिंदू महासभा और आर्य समाज का कार्य विस्तार था। 1939 में हिंदू महासभा का अधिवेशन मुंगेर में हुआ था। उस अवसर पर बाबा साहेब आप्टे एवं विजय हरि मुंजे भी आए थे। डॉक्टर हेडगेवारजी के शाखा विस्तार योजना के निमित नागपुर से सक्रिय स्वयंसेवकों को ऐसे अधिवेशनों में परिचय एवं संपर्क कर शाखा शुरू करने के लिए प्रेरित करते थे। हिंदू महासभा और आर्य समाज में अधिकतर हिंदू प्रेमी ही आते थे। उसी अवसर पर मुंगेर के हिंदुत्व प्रेमी जिसमें स्वर्गीय कैलाशचंद्र वर्मा, सीताराम खेमका, नरसिंह मंडल, केदारनाथ गोयनका आदि के साथ बैठक लेकर तय हुआ कि संघ की शाखा अंग प्रदेश मुंगेर में भी प्रारंभ हो। हालांकि संघ के विषय में स्थानीय हिंदू महासभा के नेता और आर्य समाजी लोग अनजान थे, लेकिन बाबा साहेब आप्टे से प्रेरित होकर मुंगेर नगर के एक तरुण ओमप्रकाश गुप्ता को नागपुर में संघ शिक्षा वर्ग के लिए भेजा गया। उस समय ओटीसी कहा जाता था। उस समय क्षेत्र व प्राथमिक, प्रथम व द्वितीय वर्ष प्रशिक्षण ऐसा कुछ भी नहीं था। श्री ओमप्रकाश गुप्ता नागपुर से 40 दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त कर लौट आए। दिनांक 15 जुलाई, 1939 को ओम प्रकाश गुप्ता ने नरसिंह मंडल जी के हॉल में शाखा प्रारंभ की। यह हवेली का हाल आज भी

मौजूद है। इस अवसर पर माननीय श्री बापूराव दिवाकर (प्रांत प्रचारक) एंव नरहरि परखी भी उपस्थित थे। स्वयंसेवकों में श्री नरसिंह मंडल, महावीर मस्त, लौंगी महतो, कृष्णकांत प्रसाद, सच्चिदा प्रसाद वर्मा भी थे। कुछ महीनो के बाद शाखा आर्य समाज मंदिर प्रांगण (बड़ी संगत) में बड़ी बाजार निकट लगने लगी थी।

सर्वविदित है कि संघ कार्य ईश्वरीय कार्य है। मुंगेर के कुछ बुद्धिजीवी हिंदूनिष्ठ संघ के शुभचिंतक जो अप्रत्यक्ष रूप से शाखा प्रारंभ करने और कार्य को गति देने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिए। उनमें से सर्वश्रेष्ठ ठाकुर, रामाधीन सिंह, (प्रधानाध्यापक, टाउन स्कूल), बलदेव गुप्ता, (सुपरिंटेंडेंट, टाउन स्कूल), हरिनारायण उपाध्याय, डॉक्टर काली चरण सरकार, बद्रीबाबू, चंद्रकिशन लाल, स्वर्गीय कैलाशचंद्र वर्मा, सीताराम खेमका (अधिवक्ता), श्री नरसिंह मंडल, केदारनाथ गोयनका, नवल किशोर जायसवाल मुख्य रूप से अपनी अतुल्य भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मुंगेर जिले की पहली टोली में श्री ओमप्रकाश गुप्ता, साधनचंद्र सेन, सच्चिदा प्रसाद सिंह, श्रीकृष्ण कांत, शशिभूषण वर्मा, बागेश्वर प्रसाद सिंह, हरगौरी शरण, सुरेश्वर प्रसाद, कृष्ण मोहन पाठक, तिलक प्रसाद, वीरेश्वर मजूमदार, जगदीश जी, शिव प्रसाद जी, महावीर मस्त, अमलसेन, रामचरण प्रसाद, राधाकृष्ण केसरी, इंद्रदेव गुप्ता,

तेजनारायण प्रसाद, नरदेव भगत आदि स्वयंसेवकों ने अंग प्रदेश में संघ नीव में अपने को विसर्जित कर कार्य को खड़ा किया।

प्रचार–प्रसारः– 1939 से 1948 तक मुंगेर जिले में 100 से अधिक शाखा, नगर में 30 उप शाखाएं इसकी संख्या 1000 से ऊपर रहती थी ! 1949 जुलाई से 1953 तक काफी उत्साह से सभी शाखाएं बढ़ी। 1954 से 1959 के बीच गति थोड़ी धीमी पड़ी, क्योंकि पूर्णकालिक प्रचारकों का अभाव हो गया था। 1960 से 1970 के बीच शाखाओं में पुनः गति आने लगी तथा विविध क्षेत्रों में कार्य का विस्तार हुआ। संघ की शाखा से प्रेरणा लेकर स्वयंसेवकों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे छात्रों के बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिक्षा के क्षेत्र में विद्या भारती, धार्मिक क्षेत्र में विश्व हिंदू परिषद, राजनीति के क्षेत्र में भारतीय जनसंघ, कला क्षेत्र में संस्कार भारती आदि क्षेत्रों का कार्य विस्तार किया। 1971 से 1975 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाओं का विस्तार हुआ। 1975 से 1977 के बीच संघ पर अलोकतांत्रिक ढंग से प्रतिबंध लगा दिया गया। प्रतिबंध हटाने के बाद संघ के प्रयास से सभी राजनैतिक दलों को एकत्रित कर जनता पार्टी के रूप में भारतीय समाज को अलोकतांत्रिक दल कांग्रेस के विकल्प के तौर पर खड़ा करने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। 1977 से 1982 के बीच शाखाओं में अभूतपूर्व विस्तार हुआ! 1983 से 1986 तक शाखाओं को स्थिर कार्य चलता रहा।

1986 से 1995 तक शाखाओं के विस्तार के साथ विहिप द्वारा राम जन्मभूमि मुक्ति अभियान में सभी स्वयंसेवकों ने अपनी भूमिका निभाई। घर–घर गांव गांव जाकर श्री रामशिला पूजन कार्यक्रम के निमित पूरे हिन्दू समाज मे नई स्फुर्ति का संचार हो गया। वह वास्तव में इतिहास रहा थी। 1995 से 2000 तक समाज संघ के साथ पूर्ण रूप से नजदीक आ पहुंची। संघ कार्य को खड़ा करने के लिए अपने आपको विसर्जित करने वाले पूर्णकालिक प्रचारकों ने अपना जीवन समय खपा दिए। यह ज्यादातर प्रचारक नागपुर (महाराष्ट्र) से आए, बाद में बिहार (संयुक्त झारखंड) के स्थानीय स्वयंसेवकों ने प्रचारकों को अपना समय देकर संघ कार्य को खड़ा किया। प्रचारकों में श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री उमाकांत मुरे, अन्ना देशपांडेय, मधु देशपांडेय, मधुसूदन गोपाल देव, ओंगले जी,अप्पा इंदुरकर, काशीनाथ मिश्रा, ताराकांत झा, चंद्रकांत देशमुख, नरदेव भगत, श्रीधर प्रसाद, मदन प्रसाद, लक्ष्मी प्रसाद श्रीवास्तव, हरिबल्लभ प्रसाद, प्रदुमन प्रसाद, शिवशंकर दास, राम शंकर सिंह, ईश्वरीय प्रसाद सिंह, विजय कुमार, परमेश्वर मंडल ने संघ कार्य में स्वयं को मां भारती के चरणों में समर्पित कर दिया!

मुंगेर जिले में संघचालक का दायित्व निर्वहन स्वर्गीय कैलाश प्रसाद वर्मा, प्रोफेसर कृष्ण दास, माननीय जगन्नाथ तिवारी, काशी प्रसाद राजगढ़िया, प्रकाशचंद्र गुप्ता महेश प्रसाद सिंह (लखीसराय), विन्दूनाथ झा (जमुई), आदि ने किया इनके जैसे वरिष्ठ स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन से संघ कार्य का विस्तार हुआ। बिहार के अंग प्रदेश में संघ के क्रमिक विकास में अखिल भारतीय अधिकारी का प्रवास होता रहा, जिसमें द्वितीय सरसंचालक परम पूजनीय श्री गुरूजी, बाला साहेब देवरस, बाबा साहेब आपटे, स्वर्गीय भैयाजी दानी, स्वर्गीय दादाराव परमार्थ, स्वर्गीय माधवराव मुले, माननीय रज्जू भैया, माननीय सुदर्शन जी, माननीय श्री हो. वे. शेषाद्री, स्वर्गीय एकनाथ रानाडे, भाऊ साहब मुस्कुटे, माननीय श्री सुरेशराव केतकर आदि का नाम उल्लेखनीय है!

साथ ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बैनर तले पूरे देश में स्वतंत्रता का आंदोलन चल रहा था! संघ के स्वयंसेवक सभी रूप से सक्रिय थे! इसी क्रम में महात्मा गांधी जी द्वारा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में अंग प्रदेश (मुंगेर) से स्वर्गीय जगपति सिंह, ओमप्रकाश गुप्ता, श्वेतांबर प्रसाद गुप्ता, श्री शशिभूषण वर्मा, श्री दयानंद प्रसाद संघ के स्वयंसेवक होते हुए व्यक्तिगत रूप से भाग लिया!

(क्रमशः)

हिंदुत्व चिंतन ही विश्व शांति का आधार

– आलोक कुमार

हिंदुत्व चिंतन परम्परा ही विश्व में शांति का आधार बन सकता है। आज विश्व पूंजीवाद, आतंकवाद से भयाक्रांत है। दुनिया के कई देश अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए वर्षो से युद्धरत हैं, रक्तपात मचा हुआ है। सम्पूर्ण विश्व मानवता की रक्षा के लिए भारत को अग्रणी भूमिका निभानी होगी। उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. आलोक कुमार जी ने 12 जून को मुंगेर के पुरानीगंज स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में चल रहे कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम), संघ शिक्षा वर्ग और घोष वर्ग के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुंगेर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उत्तर–पूर्व क्षेत्र द्वारा गत 23 मई से कार्यकर्ता विकास वर्ग (सामान्य, प्रथम) तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दक्षिण बिहार द्वारा संघ शिक्षा वर्ग एवं घोष वर्ग 27 मई से आयोजन किया गया था। कार्यकर्ता विकास वर्ग (सामान्य, प्रथम) में 127 शिक्षार्थियों ने, संघ शिक्षा वर्ग में 206 तथा घोष वर्ग में 22 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वही प्रगट कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों ने योग, नियुद्ध, समता समेत कई शारीरिक प्रदर्शन किए।

स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए आलोक कुमार जी ने कहा कि यह वर्ग मात्र एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि स्वयं को राष्ट्र, समाज और संगठन के प्रति अनुशासन और समर्पण का दायित्वबोध तथा कर्तव्यबोध कराने का माध्यम है। पुरातन काल मे देवताओं ने भी राक्षकों का सामना करने के लिए एक समूह में कार्य किये, जिसका उल्लेख वेदों में हैं। इस प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति और समाज निर्माण की जो आधारशिला गढ़ी गई है उसे आगे जन–जन तक पहुंचाए जाने की आवश्यकता है, तभी पूरे विश्व में भारत माता का जय गान होगा। भारत अपनी सांस्कृतिक जड़ों, ज्ञान और मानवीय मूल्यों के साथ विश्व पटल पर सशक्त रूप से आगे बढ़ेगा।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक रामनवमी प्रसाद, क्षेत्र प्रचार प्रमुख राजेश कुमार पाण्डेय, क्षेत्र प्रचारक प्रमुख अरुण कुमार, क्षेत्र बौद्धिक शिक्षण प्रमुख राणा प्रताप, क्षेत्र शारीरिक शिक्षण प्रमुख मनोज कुमार। उत्तर बिहार प्रान्त संघचालक प्रो. राज किशोर सिंह, दक्षिण बिहार के प्रान्त प्रचारक उमेश कुमार, सह प्रान्त प्रचारक आशीष रंजन, प्रान्त कार्यवाह राजेंद्र प्रसाद, सह प्रान्त कार्यवाह बालमुकुंद गुप्त, विभाग संघचालक मा० अमरनाथ केशरी समेत मुंगेर के विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य नागरिक और मातृशक्ति भारी संख्या में उपस्थित रहे।

मातृत्व भाव के साथ हर क्षेत्र में अग्रणी बनें बहनें – मा. शांता कुमारी

भारत की नारी शक्ति आज हर क्षेत्र में अग्रणी हो रही है, चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या खेल का। परंतु बहनों को हमेशा स्मरण रहना चाहिए कि उनके गर्भ में भारत का भविष्य पलता है। इसलिए अपनी बहनों को मातृत्व भाव को कायम रखते हुए जीवन के हर क्षेत्र में आगे जाना है। उक्त विचार राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका माननीया शांता कुमारी ने 14 जून को पटना में व्यक्त किए।

पटना सिटी के मरचा मरची रोड स्थित केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल में राष्ट्र सेविका समिति द्वारा 15 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग (प्रवेश) एवं घोष वर्ग आयोजित किया गया था। उत्तर पूर्व क्षेत्र (बिहार–झारखण्ड) के इस वर्ग में कुल 120 की संख्या थी। संघ शिक्षा वर्ग (प्रवेश) की संख्या 90 थी, जबकि घोष वर्ग की संख्या 30 थी। वर्ग के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मा. शांता कुमारी ने कहा कि नारी में दिव्य शक्ति विद्यमान रहती है। उनमें विशेषकर दो शक्तियों का ज्यादा प्रभाव रहता है। ये दो शक्तियां हैं – अनुग्रह शक्ति और निग्रह शक्ति। इन शक्तियों का अनुसरण करके परिवार, समाज और देश के कल्याण का समग्र कार्य मातृत्व भाव से किया जा सकता है। उन्होंने समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन निःस्वार्थ भाव से करने का आग्रह भी किया।

समापन समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात चर्म रोग विशेषज्ञ और पीएमसीएच की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा सिंह थी। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत दक्षिण बिहार प्रान्त की प्रान्त कार्यवाहिका कमला सिंह ने किया। समापन समारोह में अखिल भारतीय सरकार्यवाहिका सुनीता हल्देकर, वर्ग की सर्वाधिकारी इंदिरा तिवारी, सह प्रांत कार्यवाहिका निवेदिता सिंह, रेणु दीदी अदिति, पुष्पांजलि, शीला दीदी समेत सैकड़ों बहनें उपस्थित थी। कार्यक्रम देखने पटना से बड़ी संख्या में लोग आए थे।

बदलते मौसम में रखें दिल का ध्यान

–डॉ कन्हैया प्रसाद

बरसात का मौसम अपने साथ राहत तो लेकर आता है, लेकिन स्वास्थ्य के लिए कई चुनौतियाँ भी खड़ी कर देता है। आमतौर पर इस समय लोग सर्दी, खांसी और वायरल संक्रमण से बचने की बात करते हैं, परंतु दिल की सेहत पर इसका असर कम नहीं होता। उमस, अनियमित दिनचर्या, खान–पान में लापरवाही और शारीरिक गतिविधियों में कमी हृदय संबंधी समस्याओं को बढ़ा सकती है। इसलिए इस मौसम में दिल का ख्याल रखना उतना ही जरूरी है जितना किसी और अंग का।

दिल हमारे शरीर का वह इंजन है जो बिना रुके लगातार काम करता रहता है। लेकिन जब हम अपनी जीवनशैली को लेकर लापरवाह हो जाते हैं, तो इसका सबसे पहला प्रभाव इसी पर पड़ता है। बरसात के दिनों में अक्सर लोग घरों में अधिक समय बिताते हैं, बाहर निकलना कम हो जाता है और तली–भुनी चीजों की ओर आकर्षण बढ़ जाता है। पकौड़े, समोसे और अन्य मसालेदार खाद्य पदार्थ स्वाद तो देते हैं, लेकिन इनमें मौजूद अतिरिक्त तेल और नमक हृदय के लिए नुकसानदायक साबित हो सकते हैं।

इस मौसम में रक्तचाप के उतार–चढ़ाव की संभावना भी बढ़ जाती है। जिन लोगों को पहले से उच्च रक्तचाप, मधुमेह या हृदय रोग की समस्या है, उन्हें विशेष सतर्क रहने की आवश्यकता होती है। कई बार सीने में हल्का दर्द, सांस फूलना या अत्यधिक थकान जैसे संकेत शरीर हमें पहले ही दे देता है, लेकिन हम उन्हें सामान्य कमजोरी समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। यही लापरवाही आगे चलकर गंभीर समस्या का रूप ले सकती है।

दिल को स्वस्थ रखने के लिए बहुत बड़े बदलावों की आवश्यकता नहीं होती। रोजाना कुछ समय टहलना, योग करना या हल्का व्यायाम करना भी पर्याप्त हो सकता है। इसके साथ ही भोजन में हरी सब्जियों, फलों और प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थों को शामिल करना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना भी जरूरी है, क्योंकि शरीर में पानी की कमी रक्त संचार को प्रभावित कर सकती है।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव भी हृदय रोगों का एक बड़ा कारण बन चुका है। काम का दबाव, भविष्य की चिंता और लगातार मानसिक तनाव दिल पर अतिरिक्त बोझ डालते हैं। इसलिए जितना जरूरी शारीरिक स्वास्थ्य है, उतना ही जरूरी मानसिक स्वास्थ्य भी है। कुछ समय अपने लिए निकालना, परिवार के साथ समय बिताना और सकारात्मक सोच बनाए रखना हृदय को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि किसी व्यक्ति को अचानक सीने में दर्द, बाएं हाथ या कंधे में भारीपन, सांस लेने में परेशानी या असामान्य पसीना आने लगे तो उसे तुरंत चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। ऐसे संकेतों को कभी भी सामान्य मानकर टालना नहीं चाहिए।

दरअसल, दिल की देखभाल किसी एक महीने या एक मौसम तक सीमित नहीं है, लेकिन बदलते मौसम में इसकी आवश्यकता और बढ़ जाती है। यदि हम संतुलित खान–पान, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और तनावमुक्त जीवनशैली को अपनाएं, तो न केवल हृदय रोगों से बच सकते हैं बल्कि एक स्वस्थ और ऊर्जावान जीवन भी जी सकते हैं।

विहिप–बजरंग दल की पहल– गोवंश के लिए नाद की व्यवस्था

विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और बजरंग दल कटिहार ने गौ सेवा एवं गौ संरक्षण के क्षेत्र में एक नई पहल शुरू की है। संगठन द्वारा शहर और आसपास के विभिन्न क्षेत्रों में गोवंश के लिए श्नादश (चारा पात्र) की व्यवस्था की जा रही है। इसका उद्देश्य सड़कों पर घूम रहे गोवंश को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना है।

संगठन लंबे समय से गौ सेवा से जुड़े कार्य कर रहा है। इसमें गौओ तस्करों और कसाइयों से गोवंश को मुक्त कराना, बीमार एवं घायल गोवंश का उपचार कराना और मृत गोवंश का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार कराना शामिल है।

यह नाद व्यवस्था विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल कटिहार के गौ सेवा विभाग द्वारा शुरू की गई है। इस पहल से गोवंश को कूड़े–कचरे में भोजन खोजने की विवशता से बचाया जा सकेगा और उन्हें नियमित रूप से भोजन मिल पाएगा।

संगठन ने नगरवासियों से अपील की है कि वे अपने घरों से बचा हुआ उपयुक्त भोजन, रोटी, साग–सब्जी और अन्य खाद्य सामग्री इन निर्धारित नाद में डालें। यह भारतीय परंपरा के अनुरूप है, जहां पहली रोटी गौ माता के लिए निकाली जाती है।

प्रांत सुरक्षा प्रमुख अनिश सिंह ने कहा, षौ माता भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा का आधार हैं। विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल केवल गौ रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि गौ सेवा को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानता है। नाद स्थापना अभियान समाज और गोवंश के बीच सेवा एवं संवेदना का सेतु बनेगा। हम सभी नागरिकों से इस अभियान में सक्रिय सहभागिता का आग्रह करते हैं।

जिला सह मंत्री प्रीतम प्रताप सिंह ने बताया, ष्कटिहार में विभिन्न स्थानों पर नाद की व्यवस्था की जा रही है ताकि सड़क पर विचरण कर रहे गोवंश को पर्याप्त भोजन मिल सके। यदि प्रत्येक परिवार प्रतिदिन थोड़ा–सा भोजन गोवंश के लिए अलग रखकर नाद में डाले तो यह एक बड़ा जनआंदोलन बन सकता है। गौ सेवा विभाग द्वारा आने वाले समय में कई और सेवा परियोजनाएं भी प्रारंभ की जाएंगी।

देशी गौ वंश

बाचौर नस्ल के मवेशी छोटे सींग वाले, सफेद या हल्के भूरे रंग के होते हैं। यह नस्ल हरियाना नस्ल से काफी मिलती–जुलती है। कुछ लोगों का मानना है कि यह हरियाना नस्ल की ही एक बिगड़ी हुई किस्म हो सकती है। यह नस्ल अपने भार ढोने की क्षमता और कम गुणवत्ता वाले चारे पर भी अच्छी तरह पलने–बढ़ने के लिए जानी जाती है। यह नस्ल भारत के बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिले के बाचौर और कोइलपुर उपखंडों में पाई जाती है।

विशेषताएं

बाचौर नस्ल के मवेशी सुगठित शरीर वाले होते हैं, जिनकी पीठ सीधी, धड़ सुगठित, गर्दन छोटी और कंधे मजबूत होते हैं। माथा चौड़ा और चपटा या थोड़ा उभरा हुआ होता है। आंखें बड़ी और उभरी हुई होती हैं। सींग मध्यम आकार के और ठूंठदार होते हैं। कान मध्यम आकार के और लटके हुए होते हैं। कूबड़ सुगठित, मजबूत और मध्यम आकार का होता है। वर और नाभि का आवरण हल्का और शरीर से सटा हुआ होता है। गलपट्टा मध्यम आकार का और ज्यादा भारी नहीं होता है। पैर सुंदर, सुगठित और मजबूत होते हैं। कूबड़ के पीछे बैल की ऊंचाई 58–62 इंच होती है और छाती की परिधि 68–72 इंच तक होती है। पूंछ छोटी और मोटी होती है और आमतौर पर टखनों से ज्यादा लंबी नहीं होती। सबसे आम रंग धूसर या सफेद–धूसर होता है।

यह नस्ल अपने मध्यम भार ढोने की क्षमता के लिए इस क्षेत्र में प्रसिद्ध है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल में, जब ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन था, तब परिवहन के लिए इस नस्ल के बैलों की बड़ी संख्या में मांग रहती थी। इस नस्ल के बैल मध्यम गति के होते हैं और एक जोड़ी बैल गाड़ी में 2/3 टन तक का भार खींच सकते हैं। गायें दूध का अच्छा उत्पादन नहीं करतीं।

संघर्ष, संकल्प और सफलता : बिहार की दो बेटियों ने रचा नया इतिहास

बिहार की बेटियां आज हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर नई ऊंचाइयों को छू रही हैं। सीमित संसाधन, आर्थिक चुनौतियां और सामाजिक कठिनाइयां भी उनके हौसलों को कमजोर नहीं कर पा रही हैं। 70वीं बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) परीक्षा के परिणाम ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, मेहनत ईमानदार हो और आत्मविश्वास अटूट हो, तो सफलता अवश्य मिलती है। मधुबनी जिले की आरती कुमारी और बक्सर जिले की सुंदरी कुमारी इसकी प्रेरणादायक मिसाल हैं।

मधुबनी जिले के मधेपुर प्रखंड अंतर्गत तरडिहा गांव की आरती कुमारी का चयन सप्लाई इंस्पेक्टर पद पर हुआ है। आरती की सफलता का सफर संघर्षों से भरा रहा है। जब वह मात्र चार वर्ष की थीं, तभी उनके पिता दिलीप कुमार यादव का निधन हो गया। इसके बाद उनकी मां रानी देवी ने अकेले ही दोनों बेटियों की परवरिश की। खेती–बाड़ी कर परिवार चलाने और बेटियों की शिक्षा का खर्च उठाने वाली रानी देवी का सपना था कि उनकी बेटी एक दिन अधिकारी बने। आरती ने अपनी मेहनत और लगन से मां के इस सपने को साकार कर दिखाया।

गांव के विद्यालय से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वाली आरती ने लगातार अपनी पढ़ाई जारी रखी। मैट्रिक, इंटरमीडिएट और स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू की। वर्तमान में वह इग्नू से स्नातकोत्तर की पढ़ाई भी कर रही हैं। उनकी सफलता ने यह साबित किया है कि कठिन परिस्थितियां कभी भी सफलता की राह में स्थायी बाधा नहीं बन सकतीं।

वहीं बक्सर जिले के चौसा प्रखंड के बनारपुर गांव की सुंदरी कुमारी ने 70वीं बीपीएससी परीक्षा में 150वीं रैंक प्राप्त कर स्टेट टैक्स असिस्टेंट कमिश्नर के पद पर चयनित होकर पूरे क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। सुंदरी का परिवार आर्थिक रूप से बेहद साधारण है। उनके पिता अनिल राम मजदूरी कर परिवार का भरण–पोषण करते हैं। आर्थिक तंगी के बावजूद उन्होंने अपनी बेटी की शिक्षा में कोई कमी नहीं आने दी।

सुंदरी की सफलता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने प्रारंभिक तैयारी बिना किसी कोचिंग संस्थान के घर पर रहकर की। पहले प्रयास में उन्हें मुख्य परीक्षा में सफलता नहीं मिली, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अपनी कमियों को पहचानते हुए उन्होंने और अधिक मेहनत की तथा दूसरे प्रयास में सफलता हासिल कर ली। उनका कहना है कि मेहनत और लगन कभी व्यर्थ नहीं जाती। यदि मन में विश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण हो, तो सफलता निश्चित रूप से मिलती है।

आरती और सुंदरी की कहानियां केवल व्यक्तिगत उपलब्धि की कहानी नहीं हैं, बल्कि वे बिहार की लाखों बेटियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। दोनों ने यह सिद्ध किया है कि संसाधनों की कमी, आर्थिक अभाव या पारिवारिक कठिनाइयां किसी भी व्यक्ति की प्रतिभा को रोक नहीं सकतीं। जरूरत है केवल दृढ़ निश्चय, निरंतर प्रयास और आत्मविश्वास की।

आज जब समाज में बेटियों की शिक्षा और सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया जा रहा है, तब आरती कुमारी और सुंदरी कुमारी जैसी सफलताएं यह संदेश देती हैं कि बेटियां न केवल अपने परिवार का, बल्कि पूरे समाज और राज्य का नाम रोशन कर सकती हैं। उनकी उपलब्धियां आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का प्रकाशस्तंभ हैं, जो यह बताती हैं कि सपने देखने और उन्हें पूरा करने का अधिकार हर बेटी को है।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

डाक टिकट

पता